IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

कोशी कमिश्नरी में स्वतंत्रतता आन्दोलन का इतिहास (प्रथम विश्वयुद्ध के संदर्भ में)

डा0 रत्नेश कुमार

ग्राम– मौजमा, पो0– जिरवा, मधेपुरा, बिहार

भूपेन्द्र नारायण मंडल विश्वविद्यालय, मधेपुरा

प्रथम विश्वयुद्ध में भारत सरकार ने ब्रिटिश सरकार के साथ पूरा–पूरा सहयोग किया। भारत को आशा थी कि सरकार इस सहयोग का आदर कर आजादी की मांग पर सहानुभूति दिखयागी, पर हुआ उल्टा। 8 अगस्त 1914 को शुरू होनेवाला महायुद्ध 11 नवम्बर 1918 को समाप्तहुआ। मित्र राष्ट्र विजयी हुए। जर्मनी का औपनिवेशिक साम्राज्य, यूरोप का आस्ट्रो–हंगेरियन साम्रज्य तथा पश्चिमी एशिया का तुर्की साम्राज्य छिन्न–भिन्न हो गया और जर्मनी, आस्ट्रिया तथा तुर्की को केवल राष्ट्रीय राज्यों के रूप में सिकुड़कर रह जाना पड़ा। रूस में भी बोल्शेविक क्रांतिसफल हो गई और परिवार तथा अभिजात वर्ग के अधिकांश लोगो के साथ जार का खात्मा हो गया। अफगानिस्तान अपने पर राष्ट्र नीति निर्धारण करने में स्वतंत्र था। संपूर्ण विश्व में एक क्रांतिकारी परिवर्तन हो रहा था। भारत में आम लोगों ने देखा कि "कंपनी बहादुर" जो अजेय है, उसको साधारण से दिखने वाले गाँधी जी ने चंपारण में पानी पिला दिया और निलहे अंग्रेजों के अत्याचार से किसानों को निजात दिलायी। यह भारत के लिए एक अद्भूत धरना थी। किसी हथियार के सत्याग्रह के द्वारा उन्होने विजय पायी थी। यह सत्याग्रह क्या है? गाँधी कौन? लोगो की उत्सुकता बढ़ने लगी थी और लोग स्वशासन प्राप्त करने के लिए राजनीति में रूचि लेने लगे थे।

1917 के पहले गाँधी जी की इतनी ख्याति नही थी। 21 वर्ष दक्षिण अफ्रीका में बिताने के बाद गाँधी जी अपने परामर्शदाता गोखले की मृत्यु के कुछ ही समय पूर्व 1915 में भारत वापस आये थे। दक्षिण अफ्रीका में उन्होने भारतीय श्समाजके विरूद्ध होने वाली वर्गभेद की नीति के विरूद्ध सत्याग्रह आंदोलन चलाकर सफलता प्राप्त की थी। गाँधी जी नरमपंथी और श्समाजसुधारक समझे जाते थे। सार्वजनिक कार्यो में पूर्ण सत्य का आश्रय लेकर उन्होने अभूतपूर्व तत्व का समावेश किया था। अपनी इमानदारी में निष्ठा रखते हुए दृढ़ संकल्पित होकर अहिंसात्मक ढंग से अन्याय का प्रतिकार साहस के साथ करने का उनका सिद्धांत था, चाहे इसके लिए कितनी भी यातना क्यों न भोगना पड़े। गांधी जी की इस अहिंसा की राणनीति को लोग समझ नहीं सके थे और इसको न ही व्यवहाँरिक मानते थे। 1917 में उन्होने इसका प्रयोग चंपारण में करके दिखाया और इसे आंदोलन के लिए एक अस्त्र के रूप में व्यवहार करने हेतु आग्रह किया। बिहार, बंगाल में अंग्रेज नील की खेती करते थे। उन्होने जमींदारी बना रखी थी और किसानों को अपनी सबसे अच्छी जमीन की एक तिहाई भाग में नील बोने के लिए मजबूर करते थे जिसे तिनकठिया प्रथा कहा जाता था। नील का उत्पादन अंग्रेजो के लिए भले ही फायदेमंद था लेकिन गरीब किसान भी तो अन्न की आवश्यकता थी, अतः उन पर यह भीषण अत्याचार करने वाला सिद्ध हो रहा था, उसे भूखो रहना पड़ता था। श्री राजकुमार शुक्ला के आग्रह पर गांधी जी चंपारण आये और स्थिति का जायजा लेने के बाद उन्होने किसानों के प्रति अंग्रेजो द्वारा किये जाने वाले इस पार्षविक अत्याचार के विरूद्ध सत्याग्रह अस्त्र का प्रयोग शुरू किया। यहीं से उनके साथ डा0 राजेन्द्र प्रसाद बाबू ब्रजकिशोर नारायण आदि लोग जुड़े। अप्रेल 1917में गाँधी जी चंपारण के सदर मुकाम मोतीहारी के किसानो की तकलीफो की जाँच हेतु आऐ थे । उनके वहाँ पहुँच ते ही उनको चंपारण जिला छोड़ देने का आदेश । मिला। उन्होने इस हुक्म को मानने से इनकार किया और आदालत में खुद ही हाजिर हो गए ।उन्होने अपने हुक्म अदुली के लिए अपना दोष स्वीकार किया और सरकार को चुनोती दी कि उन्हे सजा दी जाय। उन्होने की हुक्म अन्याय पूर्ण हैं और हमारे अस्तिव के उच्चत्त्र विधान अथात हमारेअतःकरन के विरूद्ध है। न्यायाधीश के होश उड़ गये। उन्होने अपना फैसला रोक कर इस संबंध मे गर्वनर से निर्देश मांगा। गाँधी जी की निर्भिकता ने लोगों के अंदर उनके

प्रति असीम श्रद्धा जगा दी और गर्वनर ने उस हुक्म को वापस लेने में ही बुद्धिमानी समझी। गांधी जी ने चंपारण के किसानों के साथ उन्हीं की तरह रहते हुए जांच का काम पूरा किया। फलतः सरकार को एक आयोग कि नियुक्ति करनी पड़ी जिसके फलस्वरूप निलहों का राज खत्म हो गया। राजनैतिक चेतन संपन्न लोगो के समक्ष सत्याग्रह की महान संभावनाएँ उद्घाटित हो गयी। गरीब, अशिक्षित किसान सुमदाय को अहिंसा की इस चमत्कारी शक्ति का दर्शन हुआ और जो समझदार लोग से उन्होने देखा कि इस सत्याग्रह अस्त्र का प्रयोग सफल रूप से जनता द्वारा आसानी से अपनाया जा सकता है।

1917 एक चमत्कारी वर्ष था। देश की युवा पीढ़ी को स्वतंत्रता की संभावनाएँ गाँधी जी के नेतृत्व में संघर्ष करते हुए दिखने लगी थी। 1918 में कांग्रेस का अधिवेशन दिल्ली में होने जा रहा था और इसके लिए डेलिगेट मे आम जनों की भागीदारी लेने की सोची जा रही थी। एक जन आंदोलन खड़ा करना था। तय हुआ कि देश के विभिन्न भाग से 1000 किसान अधिवेशन में भाग लें। अब तक कांग्रेस शहरी लोगों का हुआ करता था, गाँव देहात के लोगो की कोई हिस्सेदारी नही हुआ करती थी। अब 1918 के दिल्ली अधिवेशन से राष्ट्रीय आंदोलन ग्रामभिमुख हो गया।[2] राजनैतिक दृष्टि से जागरूक लोगों कायह कर्तव्य बनता था कि वे आम जनों मे राष्ट्रीय चेतना जागृत करे और उन्हें समझाएँ कि वे अपना भाग्य निर्माण स्वंय कर सकते है। श्री रामबहादुर सिंह इस दिशा मे अग्रसर हुए। जुलाई 1918 में प्रकाशित मांटग्यू चेम्स फोर्ड रिपोर्ट जो चार मास पूर्व अप्रैल में प्रकाशित की गई थी, जिसके अनुसार द्वैध शासन और प्रांतीय प्रशासन में उतरदायी मंत्रियों के हाथ शिक्षा और सार्वजनिक लाक निर्माण विभाग सौपा गया तथा पुलिस, न्याय और भूमि राजस्व गर्वनर और उनके पार्षद के जिम्में रहा। इस तरह भारतीयों को अभी भी स्वशासन के काबिल ही नही समझा गया था। अस्तु आंदोलन को बिल्कुल तृणमूल से शुरू करने की जरूरत थी। राम बहादुर बाबू ने अपने समव्यस्क लड़को की एक टोली बनाई जिसमें किसानो के उत्साही लड़के थे– रतिलाल शर्मा, रामरक्षा ठाकुर आदि।[3] इन्होने देखा कि चंपारण में गांधी जी गाँव देहात में पाठशाला खोलकर राष्ट्रभावना पैदा करने के लिए किसानों के बीच जाकर उनकी समस्याओं का विचार–विनिमय करते है। अभी इसी तरह गाँव–गाँव में जाकर विचार सभा करने की जरूरत है ताकि आम लोगो को सूदुर दिल्ली में होनेवाले घटनाक्रमों से परिचित किया जा सके। अभी तक किसानो मजदूरों यहाँ तक कि छोटे–मोटे कास्तकारों और दुकानदारों को सत्ता और शासन से कुछ लेना–देना नहीं था। वे इस बड़ें लोगो और पढ़े–लिखे समझदार लोगो का विषय समझते थे। भारत में प्रजा–सत्ता का विकाश नहीं हुआ था। राम बहादुर बाबू लोगों को समझाते थे कि बीसवीं सदी में जबकि विष्व में प्रजातंत्र की लहर चली है, मोसोपोटामिया, असीरिया, अरब आदि पिछड़े हुए देशों में भी स्वतत्रंता की चेतना जाग रही है, हमें भी अपना शासन आप ही करना चाहिए।[4]

1918 में दिल्ली अधिवेशन में देश के विभिन्न भागो से हजारों किसानो का जुटान हुआ। पहली बार कांग्रेस की कार्यवाही हिन्दी में हुई। कांग्रेस अब जन संगठन हो गया। और इस बात की पुरजोर मांग की गई कि भारत पर जो युद्ध खर्च का 15 मिलियन का बोझ लादा गया है उससे इसे मुक्त किया जाय। महायुद्ध के पश्चात् जो आत्मनिर्णय का सिद्धांत स्वीकार किया गया उसके अनुसार संसार के प्रत्येक छोटे–बड़े, सभ्य–असभ्य सभी देशो को अपने मनमाने ढ़ग की शासन प्रणाली चुन लेने की स्वाधीनता मिली। इस पर प्रधानमंत्री मि0 लायर्ड ने भी अपनी मुहर लगाई। भारत के लिए भी लागू करने की मांग रखी गई। इसी अधिवेशन में शांति सम्मेलन में भाग लेने के लिए, सर्वजनमान्य जन–प्रतिनिधि के रूप में, लोकमान्य तिलक, गांधी जी और हसन इमाम को चुना गया।[5]

रामबहादुर सिंह ने अपने साथियों से कहा था –"दिल्ली को देखो, यही है प्राचीन युग का हस्तिनापुर जहाँ अन्यायी कौरवों ने द्रौपदी का चीर उतारने का प्रयास किया था बाद में मुट्ठी भर पाण्डवों ने भगवान कृष्ण के नेतृत्व में इन कौरवों का विनाश किया। आज जो ये अंग्रेज हमारीधन–संपति पर कुण्डली मारे नाग की तरह अधिकार जमाये बैठे है और हमे कंगाल बनाकर छोड़ा है, एक दिन इन्हें भी अपना बोरिया–बिस्तर समेटकर इंगलैण्ड जाना पड़ेगा। जरूरत है देश को गांधी जी के मार्ग का अनुसरण करने की। "कृष्ण को सुदर्शन चक्र था और गांधी को चर्खा है।"[6]

दिल्ली से लोगों के बाद राम बहादुर बाबू पूणतः गाँधीवादी बन गए। निरामिश आहार और सादा लिवाश को अपना लिया।

प्रथम विश्वयुद्ध का अंत होते–होते भारतीय राजनीति अपनी दिशा बदल चुकी थी। युद्ध से पहले राजनीति कांग्रेस के नरम विचार बालों के हाथों में थी। इन लोगो को ब्रिटेन की लोकतंत्रात्मक शासन पद्धति पर पुरा विश्वास था। क्रमशः राजनीति सुधारो के द्वारा में स्वतंत्रता प्राप्ति की आशा रखते थे। लेकिन युद्धांत के समय से देश में जो नई पीढ़ी बजुद में आ रही थी और अंग्रेज शिक्षा के प्रचार–प्रसार से जनसत्ता की अहमियत का इन युवा वर्गो को जो मान हो रहा था – वह उन्हें जुझारू राजनीति आंदोलन अब उपर से नही बल्कि नीचे से छोटी–छोटी समस्याओं को लेकर शुरू किया जाना शुरू हो गया था और उसमें उन्हे सफलता भी मिल रही थी। पहले जैसे अखिल भारतीय मुद्दे को लेकर आंदोलन की रणनीति तय करने में लोगों की अभिरूची कम दिखाई पड़ रही थी।

राम बहादुर बाबू जैसे युवा वर्ग के लोग देख रहे थे कि जब राजकुमार शुक्ल और बाबू ब्रजकिशोर प्रसाद जो 31 वे अखिल भारतीय कांग्रस अधिवेश, लखनउ में बिहार के प्रतिनिधि थे, चंपारण की स्थानीय समस्या नीलवशों के अन्याय अत्याचार को लेकर प्रस्ताव पारित करा सकते है और गांधी को इस ओर उन्मुख कर सकते है तो अब राजनीति में उन सबों के लिए भी कार्य करने के बहुत सारे अवसर है। बिहार के प्रथम गांधी के लिए दक्षिण अफ्रीका के बाद सत्याग्रह का मार्ग खोला गया था। बाद में बल्लभ भाई पटेल के नतुत्व में खेड़ा और बारदोली की सफलता में यह सिद्ध कर दिया कि स्वतत्रंता

आंदोलन को स्थानीय समस्या को उठाकर ही गतिशील किया जा सकता है। देश में उत्तरोतर ऐसी परिस्थिति बन रही थी, सामान्य वर्ग की जनता विदेशों में लड़ने जा रही थी और सफलता हासिल कर रही थी। ब्रिटेन की सरकार को भारत के जन सामान्य के सहयोग और सहायता की आवश्यकता बेहतर महसुस हो रही थी। अतः जन सामान्य का विश्वास हासिल करने के लिए भारत मंत्री मांटेग्यू ने 20 अगस्त 1916 को भारतीय प्रशासनिक सुधार की घोषणा की जिसके आधार पर 1919 का "गवर्मेट ऑफ इण्डिया एक्ट (1919)" आया।[7]

इस परिवर्तन के कइ कारण थे। 1905 से ही भारतीय जन मानस में यह विश्वास बद्धमूल हो गया कि एशिया के लोग किसी भी तरह यूरोपियनों से पीछे नही हे। जब एक छोटा सा देश जापान रूस को धरा बता सकता है, तो भारत तो एक बहुत विशाल देश है। ब्रिटेन ने प्रथम विश्वयुद्ध में भारतीय सैनिको का मुक्त कंठ से प्रशंसा की थी। अब अंग्रेजी कौम भारतीयों के लिए कोई अचंभा नहीं रह गई थी।

परिवर्तन का दूसरा कारण था जनशक्ति का बोध। चंपारण में शक्तिशाली नीलवशों की पराजय तथा सरकार का झुकना भारतीय जनता देख चूकी थी। "खेड़ा" के किसानों एवं अहमदाबाद के कपड़ा मिल–कामगारों के साथ होनेवाले अन्याय के विरूद्ध सफल प्रतिरोध ने यह सिद्ध कर दिया था कि जनता की इच्छाशक्ति सर्वोपरि है।

परिवर्तन की तीसरी वजह थी संघ और संगठन शक्ति का यान। परिणामस्वरूप लोग हड़ताल पर जाने लगे। 1919–1920 में सलन मिल्स कानपुर, रेलवे वर्क्स, पटसन कारखाना, आम हड़ताल बंबई, रंगुन के मिल कामगारों के हड़ताल, ब्रिटिश इंडिया नेविगेशन कंपनी शोलपुर के मिल कामगार हड़ताल मद्रास के मिल मजदुरों की हड़ताल आदि हुए। केवल बंगाल में 110 हड़ताल हुई। इस अवधि में ट्रेड यूनियनों का विकाश हुआ और वही संबल बना मध्यवर्ग के लोगों का।

परिवर्तन का चौथा कारण था युद्ध के बाद फैसला व्यापक असंताष, महामारी लेग और इंफ्लूएंजा से निजात दिलाने में अक्षम सरकार, जगह–जगह अकाल की स्थिति और मुस्लमानोंका मोह–भंग जिसके चलते खिलाफत आंदोलन के तहत हिन्दु–मुसलमान एक साथ कांग्रेस मंच पर आये।[9]

परिवर्तन की पांचवी बजह रही रूस में बोल्शेविक क्रांतिका भारतीय किसानो पर प्रभाव। राजस्थान के किसान राणाओं के धमकी दे रहे थे कि अगर वे समय पर नहीं चैत तो उनकी गति रूस के जार जैसी हो सकती है।[10]

परिवर्तन का छठा कारण था भारतवासियों का क्षोभ। 1911–12 में आयकर से होनेवाली आय कुल राजस्व का 2 प्रतिशत थी जबकि 1919–20 में यह 11.75 प्रतिशत हो गई। 1917–1918 में पहली बार व्यक्तिगत आय का व्यौरा मांगा जाने लगा जिससे बड़ी संख्या में ऐसे व्यापारी आयकर के घेरे में आ गये जो पारंपरिक ढ़ंग से व्यापार करते थे उसी वर्ष कंपनियों और अविभाजित हिंदु व्यापारिक घरानों पर एक भारी कर लगाया गया तथा 1919 में अस्थायी अतिरिक्त लाभांश शुल्क भी लगाया गया।[11]

परिवर्तन का सातंवा कारण युद्ध व्यय एवं यातायात में अवरोध और अस्तव्यस्तता के कारण मूल्यों में अत्यधिक वृद्धि था। अनाज की कीमतें बेतहाशा बढ़ी। युद्धकाल में सरकार की आवश्यकताओं की पूर्ति करने में भारतीय कपड़ा मिलो को संरक्षण प्राप्त हुआ और धानों और धागों के अभाव में कमी आयी, भारतीय कपड़ा मिलो के उत्पादन में वृद्धि तो हुई लेकिन हाथ करघा का ह्रास हुआ। भारतीय बाजारों में जापानी सूती माल छाना शुरू हुआ जो बाद में भारतीय कपड़ा उद्दोग के लिए समस्या बन गई। इन सब बातों को लेकर भारतीय व्यापरियों की राष्ट्रबाद में दिलचस्पी बढ़ती गई, चाहे साबरमती आश्रम हो या तिलक स्वराज फंड इन लोगो का भरपूर योगदान रहा। सबसे अधिक प्रभावी कारण रहा भारतीय राजनीति के मंच पर गांधी जी का आगमन जिन्हें लोगों ने संकट त्राता के रूप मे युगावतार मान लिया।[12] गांधी ने लोगों में आत्मविश्वास पैदा किया, आम लोगो का मनोबल उॅचा किया। लोगो ने देखा कि यह लघुकाय महामानव जो बिल्कुल गाँव देहात का सीधा–साधा किसान सरीखा व्यक्ति है मेरे ही बीच का आदमी है। अब तक राजनीति की बागडोर उन भारतीयों के हाथ मे थी जो अंग्रेजीदां किस्म के थे। व्योमेश चंद्र बनर्जी, दादा भाई नौरोजी, जार्ज युल, विलियम बेडरबर्न, फिरोजशाह मेहता, सुरेन्द्र नाथ बनर्जी रामेश चन्द्र दत्त, दिनसा वाचा, हसन इमाम, रास बिहारी घोष, भूपेन्द्र नाथ बसु, आर0 एन0 मधोलकर, सर एस0पी0 सिन्हा, एम0 ए0 जिन्ना आदि अंग्रेजो के सान्निध्य में अपना प्रभावशाली व्यक्तित्व रखते थे। जन साधरण इनके संपक्र से कोसो दूर रहा करता था। बंद कोठरी में राजनीति करने वाले लोगो के सामने जब गांधी जी आये तो लगा कि यह दुष्मन का भी हित चिंतक है। छल–छदम हीन व्यक्ति। जवाहर लाल नेहरू ने लिखा है "गांधी जी ताजी हवा के उस प्रबल प्रवाह की तरह थे जिसने हमारेलिए पूरी तरह फैलना और गहरी सांस लेना संभव बनाया। हमारीऑखों के सामने से परदा हटा दिया और मजदूरों के दिमाग को उलट–पुलट दिया।"

वस्तुतः गांधी जी कोटि–कोटि भारतवासियों की आशा, आकांक्षा और विश्वास की प्रतिमूर्ति थे। विशाल ब्रिटिश साम्रज्य से लड़के के लिए एक ठेठकाठिया वाड़ी किसान भारतीय राजनीति के क्षितिज पर उदय हुआ था। उस समय गोखले, तिलक और मदन मोहन मालवीय जैसे भारतीय संस्कृति के परिपोषक विद्वान और राजनीतिज्ञ नेता अपने पूरे तेज से चमक रहे थे। सादी खादी की धोती कुर्ता और चालीस हाथ का काठियावाड़ी पग्गड बांधे गांधी ऐसे युवक थे जो समग्र भारतीय जनता, बाल,युवा और वृद्ध को अपनी ओर खींच रहे थे। सरल इतने कि अनायास ही सब क प्रेम पात्र बन गये। गुजरात से आसाम तक वे एकबारती छा गए। असमिया लोक तो में खासकर वैष्णव संप्रदाय के गीतो में गांधी जी को कृष्ण का जानापन्न बना दिया गया। श्री कृष्ण चक्रधर और गांधी चरखाधर के रूप में देखे जाने लगे।

इन्हीं दिनों अंग्रजी शासन का नीतिगत दोष उभरकर सामने आया। जनता अगर जुगारू हो रही थी तो शासन कठोर से कठोरतर हो रहा था। तमाम गौर सरकारी भारतीय सदस्यों के सम्मिलित विरोध के बावजूद इम्पीरियल लेजिस्लेटिव कांउसिंल में शीघ्रता से 6 फरवरी से 18 मार्च के बीच शैलेट एक्ट पास कर दिया गया। इस कानून के पास होने के बाद विशेष न्यायलय को अनियंत्रित अधिकार प्रदान किया गया। अब किसी भी भारतीय को रोजद्रोहात्मक घोषित सामग्री नहीं रखने की सजा दी जा सकती थी। यह व्यवस्था युद्धकाल में बनाये गये कानून को स्थायी रूप से बहाल रखने के लिए की गई थी। स्पष्ट था कि मांटेग्यू चेम्सफोर्ड सुधार को लेकर द्विशासन पद्धति प्रांतो में स्थापित की गई थी, भारत में गैर सरकारी और सरकारी गोरे लोग अप्रसन्न थे, उन्हे खुश रखने के लिए यह सारी व्यवस्था की जा रही थी ताकि आगामी सुधारों से वायसराय द्वारा दिए गए आश्वासन सिविल सेवा एंव अंग्रेजो के व्यापारिक हितो पर प्रतिकुल प्रभाव न पड़े। इस एक्ट के पास होने से सक्रिय राजनीतिज्ञो पर सीधा प्रभाव पड़ता था। लेकिन पुलिस को इतनी शक्तियॉ प्राप्त हो गई थी कि वे किसी हद तक भारतीय नागरिक को उत्पीड़ित कर सकते थे जिसके लिए वे पूर्व से बदनाम थे। इस एक्ट को लेकर भारतीयों में घबराहट फैलना स्वाभाविक था।

संपूर्ण राष्ट्र के स्वाभिमान पर जो चोट की गई थी इसमें भारतीय राजनीतिक जनमत कैसे किया जाए, यह एक प्रश्न बन कर खड़ा हो गया। उन दिनों गाँधी जी मद्रास में थे । सत्याग्रह कैसे किया जाए या किस रूप में किया जाए पहले इसकी ठीक–ठीक रूप–रेखा उनके समक्ष नहीं थी। बाद में आम हड़ताल करने का आह्वाहन किया गया, सत्याग्रह आत्मशुद्धि की एक प्रक्रिया है।[14] राष्ट्रीय आंदोलन को दबाने के लिए सरकार सक्रिय हो उठी और दमनात्मक कार्य शुरू कर दी। आंदोलन का सबसे उग्ररूप पंजाब में धारण किये, जिसे अहिन्सात्मक बनाये रखने हेतु गांधी जी पंजाब दौर पर निकले लेकिन पालीबान स्टेशन पर उन्हें गाड़ी से उतारकर बंबई वापस भेज दिया गया। पंजाब में दमनात्मक कार्य का सबसे विभत्स रूप 13 अप्रैल 1919 ई को गर्वनर डायर के नेतृत्व में सामने आये। उसने जलियॉवाला बाग में शांतिपूर्ण सभा में 379 लोगों को मौत के घाट उतार दिया। अन्यों के साथ अमानवीय कृत्य किये गये, हजारों लोग घायल हुए। इस हत्याकाण्ड से सम्पूर्ण भारत हिल उठा। इस घटना से बिहार में तीव्र प्रतिक्रिया हुई। रौलेट एक्ट विधेयकों के विरूद्ध खिलाफत आंदोलन बिहार में 1919 के फरवरी के अंतिम दिनों में आरंभ हुआ था। मार्च में पटना, गया, मुंगेर, मुजफ्फरपुर, छपरा, भागलपुर और मधेपुरा सबडिबिजन में विरोध प्रकट करने हेतु अनेक सभाएँ हुई। इन सभाओं में हर वर्ग के लोग सम्मिलित हुए। उनमें राजनैतिक उत्तेजना अधिक व्याप्त थी।

दिसम्बर 1919 को डा0 राजेन्द्र प्रसाद, मौलाना शौकत अली एवं उनकी मॉ का मधेपुरा आगमन हुआ वे लोग मधेपुरा के राष्ट्रवादी मुख्यतार मौलवी रजा हुसैन के यहाँरूके इन लोगों ने मधेपुरा प्रवास के दौरान अनेक गोष्ठियॉ एवं सभाएँ आयोजित की जिसमें पंचगछिया के बाबू जोगेन्द्र नारायण सिंह एंव बाबू लक्ष्मी नारायण सिंह का सक्रिय सहयोग रहा। इन जनसभाओं में खिलाफत आंदोलन के लिए भरपुर चंदे इक्टठे किए गए। किन्तु ये सारे चंदे के पैसे मौलवी रजा हुसैन के संबंधी हितनु लेकर भाग गया। मधेपुरा के वकील मोख्तार एवं व्यवसायियों ने पुनः चंदे की व्यवस्था की।[15]

प्राकृतिक आपदाओं से प्रभावित कोशी क्षेत्र के जनमानस ने राष्ट्रीय चेतना एवं जागरण की लौचें मार रहा था। कांग्रेस के सारे कार्यक्रम यहाँचलाये जा रहे थे। रासबिहारी लाल मंडल तथा अन्य नेताओं के अतिरिक्त राजकिशोर चौधरी भी राष्ट्रीय आंदोलन मे भाग ले रहे थे। अभी तक यहाँ अनुमंडलीय कांग्रेस कमिटी की विधिवत स्थापना नही हुई थी इस कार्य के लिए जनवरी 1920 ई में भागलपुर के प्रतिष्ठित नेता दीपनारायण सिंह के प्रेरणा से बाबू श्याम सुंदर प्रसाद वकालत करने मधेपुरा भेजे गए, उनका मुख्य कार्य मधेपुरा में बुद्धिजीवियों को संगठित करना राष्ट्रीय आंदोलन को गति देना था इनके ही प्रेरणा से सीरीज इंस्टीच्यूसन के शिक्षक पद से त्याग पत्र देकर शिवनन्दन प्रसाद मंडल कांग्रेस में शामिल हो गए, इनसे कांग्रेस को काफी बल प्राप्त हुआ।

उस समय दीपनारायण सिंह भागलपुर जिला कांग्रेस समिति के अध्यक्ष थे। 1921 में श्याम सुन्दर प्रसाद के नेतृत्व एवं अध्यक्षता में मधेपुरा अनुमण्डलीय कांग्रेस समिति की विधिवत स्थापना हुई। इसमें मधेपुरा के अनेक गणमान्य वुद्धिजीवियों एवं जमींदारो ने भरपुर सहयोग दिया। उन महानुभावों में बाबू जयनारायण मंडल, बाबू गिरिवर नारायण मंडल, बाबू विश्वनाथ झा, बाबू राजकिशोर चौधरी, काजी रजा हुसैन आदि प्रमुख थे।[16]

बंग भंग के बाद और पूर्व में भी मधेपुरा कांग्रेस आंदोलन का महत्वपूर्ण केन्द्र बन चूका था। खादी आंदोलन में तो वह अग्रणी था। 1921 ई0 में भागलपुर टी0 एन0 जे0 कॉलेज के चालीस छात्र प्रो0 प्रेमशंकर बोस के नेतृत्व में महाविद्यालय को त्याग कर गॉव–गॉव कांग्रेस के कार्यक्रमों को प्रचारित, प्रसारित एवं कार्यान्वित करने के लिए चल पड़े।[17] यह एक अभूतपूर्व घटना थी। यह घटना भागलपुर जिला कांग्रेस के अध्यक्ष दीप नारायण सिंह की संगठन शक्ति और शिक्षक छात्रों की राष्ट्र भक्ति भावना को रेखांकित करती है।

उसी वर्ष डा0 राजेन्द्र प्रसाद, डा0 श्री कृष्ण सिंह, दीप नारायण सिंह एवं पटेल बाबू मधेपुरा पधारे। कई सभाएँ आयोजित की गयी ।इन सभाओं में छात्र नन्द किशोर चौधरी स्वयंसेवक के रूप में कार्यरत थे। नन्द किशोर मधेपुरा के राष्ट्रवादी मुख्तार राजकिशोर चौधरी के अनुज है।

पंचगछिया निवासी बाबू राम बहादुर सिंह ने 1919 ई0 से ही भारतीय कांग्रेस की शीर्षस्थ नेताओं के संपक्र में फरवरी 1919 को "रौलेट एक्ट" के विरूद्ध आंदोलन का नेतृत्व करते हुए श्री सिंह गिरफ्तार हुए और एक वर्ष दस माह तक जेल में रहें।

उधर बिट्रिश सरकार काल के अभिलेख पढ़ने में सर्वथा अक्षम साबित हुई। दिसम्बर 1920 में अखिल भारतीय कांग्रेस समिति के कलकत्ता अधिवेशन में सरकारी दमननीति के विराध में बिट्रिश सरकार के साथ असहयोग करने का निश्चय किया गया।

संदर्भग्रंथ

1. हिमांशु, अश्विनी कुमार , कोशी का गांधी, स्वातंत्रय वीर, श्री रामबहादुर सिंह, पृ–76, सहरसा,2001
2. स्वतंत्रता सेनानी नन्द किशोर चौधरी का साक्षात्कार, श्री वास्तव, हरिशंकर, मधेपुरा में स्वाधीनता आंदोलन का इतिहास पृ–32,1996, कला कुटीर, मधेपुरा।
3. भागलपुर डिस्ट्रि 82 कांग्रेस कनफ्रेन्स–8–9 अप्रैल 1921 (पालिटिकल स्पेशल फाइल न0 541/21), तथैव, पृ–33
4. स्हरसा जिला गजेटियर (1965), पृ–43
5. मिश्रा, भवेश, स्वतंत्रता आंदोलन में सहरसा, पृ–50,1990,सहरसा
6. श्रीवास्तव, हरिशंकर, पूर्व, पृ–34
7. हिमांशु, अश्विनी, पूर्व, पृ–103–105
8. श्रीवास्तव, हरिशंकर, पूर्व, पृ–35
9. नन्द किशोर चौधरी का साक्षात्कार
10. स्वतंत्रता सेनानी शिवाधीन सिंह एवं ईश्वरी प्रसाद सिंह का साक्षत्कार, श्रीवास्तव हरिशंकर पृ–42
11. –42 भगवान चन्द्र विनोद का साक्षात्कार, श्रीवास्तव, पृ–47
12. स्वतंत्रता सेनानी बैधनाथ धर झा मजुमदार द्वारा दिया गया वृतांत बिहार के उन्नीस कालापानी बंदियों में मोहितचन्द्र अधिकारी क्रमांक 13 पर दृष्टव्य–कालापानी बंदी श्यामदेव नारायण पृ–2
13. शिवनंदन प्रसाद मंडल के चुनाव प्रचार के लिए अम्बिका प्रसाद सिंह उर्फ दादा पिता–स्व0 मंडल प्रसाद सिंह ग्राम छेयाबलिया जिला–छपरा यहाँ आए थे। बाद में यह क्षेत्र उनकी स्वतंत्रता से लाभान्वित हुआ।
14. डा0 नागेन्द्र मोहन प्रसाद श्री वास्तव –बिहार में राष्ट्रता का विकास पृष्ठ–123
15. पॉलिटिकल स्पेशल फाइल नं0 33/44
16. नन्द किशोर चौधरी तथा बैधनाथ धर मजुमदार के साक्षात्कार
17. मधेपुरा फौजदारी अभिलेख संख्या 205/41
18. डा0 के0 के0 दत्त बिहार में स्वातंत्रता आंदोलन का इतिहास खण्ड–3 पृ0–60
19. इस अधिवेशन में मधेपुरा के वर्तमान लोक अभियोजक शिनेष्वरी प्रसाद ने भी भाग लिया था वे नवगछिया उच्च विद्यालय में मैट्रिक के छात्र थे।
20. बैधनाथ धर मजुमदार का साक्षात्कार
21. पुलिस स्टेशन ऑफ मधेपुरा सक्रिल 1942 स्टेट सेन्ट्रल आफिस रेकार्ड फाईल न0 90/42 पृ0–17,18 एवं के0 के0 दत वही पृ–157
22. सेन्ट्रल रिकार्ड ऑफिस फाईल न0 90/42 पृ0 17,18